हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं

अध्याय 3

कैसे परमेश्वर हमारे जैसा है

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
बाइबल आधारित नींव 2
आधारभूत रणनीतियाँ **2**
निषेध का तरीका 3
कारक का तरीका 4
श्रेष्ठता का तरीका **6**
मनुष्यजाति के विषय में दृष्टिकोण **6**
धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण 9
प्रक्रियाएँ **9**
तकनीकी शब्दावली 10
धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य 11
ऐतिहासिक प्रलेख **13**
ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण 13
बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण 13
वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी 14
संगठन **15**
आशय **17**
परमेश्वर से अपेक्षाएँ 17
परमेश्वर का अनुकरण 19
उपसंहार 21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं

अध्याय तीन

कैसे परमेश्वर हमारे जैसा है

परिचय

एक बड़े सम्मानित गणितज्ञ और शिक्षक के विषय में एक कहानी प्रचलित है। उसकी पुस्तकें और व्याख्यान एक औसत व्यक्ति की क्षमता से बाहर की बात थे, और अक्सर वे उसके सबसे बुद्धिमान विद्यार्थियों की भी क्षमता से बाहर होते थे। परंतु एक दिन, इस विश्व-प्रसिद्ध प्राचार्य की प्रतिष्ठा हमेशा के लिए बदल गई। कई अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों ने उसके और उसके परिवार के साथ क्रिसमस मनाया, और उन्होंने उसके उस पहलू को देखा जिसकी उन्होंने कभी कल्पना नहीं की थी। अपने पोते-पोतियों और अतिथियों से घिरे हुए यह विद्वान् प्राचार्य जमीन पर बैठ कर बड़ी ख़ुशी के साथ खेलने की उन चीज़ों से खेलने लगा जो चार और पाँच साल के बच्चों के लिए थीं। विद्यार्थियों ने अगले दिन यह कहा, “इस बात पर विश्वास करना कठिन था कि उसके जैसा व्यक्ति बहुत बातों में हमारे जैसा भी हो सकता है।”

कई रूपों में, पवित्रशास्त्र परमेश्वर के विषय में कुछ ऐसी ही बात सिखाता है। वह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि से ऊँचा है — वह पूर्ण रूप से भिन्न है। परंतु साथ ही वह परमेश्वर और सृष्टि के बीच कई तरह की समानताओं को भी प्रकट करता है। समझने के लिए यह बात चाहे कितनी भी कठिन हो, परंतु पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर भी हमारे ही *जैसा* है।

यह *हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं,* की हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक दिया है, “कैसे परमेश्वर हमारे जैसा है।” इस अध्याय में, हम उन बातों को देखेंगे जिन्हें धर्मविज्ञानी आम तौर पर परमेश्वर की कथनीय विशेषताएँ कहते हैं, अर्थात् वे तरीके जिनमें परमेश्वर और उसकी सृष्टि एकसमान हैं।

इस श्रृंखला में पहले हमने परमेश्वर की विशेषताओं को इस प्रकार परिभाषित किया था :

> **विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक प्रकटीकरणों के द्वारा प्रकट की गईं परमेश्वर के तत्व की सिद्धताएँ।**

आपको स्मरण होगा कि सुसमाचारिक धर्मविज्ञानियों ने अक्सर परमेश्वर की विशेषताओं को दो समूहों में वर्गीकृत किया हुआ है। परमेश्वर की अकथनीय विशेषताएँ उसके सार की वे सिद्धताएँ हैं जो उसे अपनी सृष्टि से पूर्ण रूप से भिन्न करती हैं। और परमेश्वर की कथनीय विशेषताएँ परमेश्वर के सार की वे सिद्धताएँ हैं जो उसकी सृष्टि के गुणों के समान हैं। इस अध्याय में हम अपने ध्यान को ईश्वरीय सिद्धताओं की दूसरी श्रेणी, अर्थात् परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं की ओर लगाएँगे।

“कैसे परमेश्वर हमारे जैसा है” पर आधारित अपनी खोज को हम दो मुख्य भागों में विभाजित करेंगे। पहला, हम परमेश्वर की धर्मशिक्षा के इस पहलू के अनुसरण के लिए बाइबल आधारित नींव की खोज करेंगे। और दूसरा, हम परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं पर आधारित सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञानियों के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों की खोज करेंगे। आइए इन विषयों को देखने के लिए बाइबल आधारित नींव के साथ आरंभ करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल आधारित नींव

अपनी मानवीय सीमितताओं के कारण, जब हम इस बात की खोज करते हैं कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के विषय में क्या शिक्षा देता है, तो हम असँख्य रहस्यों का सामना करते हैं। और यह निश्चित रूप से तब भी लागू होता है जब हम परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में बात करते हैं। हमने इस श्रृंखला में सीखा कि परमेश्वर अपनी सृष्टि से पूर्ण रूप से भिन्न है — न केवल अपनी कुछ सिद्धताओं में, बल्कि उन *सब* में। परंतु इसके साथ-साथ, बाइबल से परिचित प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि यह अक्सर परमेश्वर और उसकी सृष्टि का वर्णन ऐसे करती है कि मानो वे एक जैसे हों। "पवित्र," "न्यायी," "धर्मी," "भला," "विश्वासयोग्य," "प्रेमी" और "सामर्थी" जैसे शब्दों को परमेश्वर और सृष्टि के विभिन्न पहलूओं पर लागू किया जाता है। इसलिए, यह समझना हमारे लिए चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो कि कैसे ये दोनों दृष्टिकोण एक दूसरे के साथ उपयुक्त बैठते हैं, फिर भी बाइबल आधारित विश्वास हमें इस बात की पुष्टि करने की बुलाहट देता है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न और उसके जैसा है।

हम परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के अध्ययन की बाइबल आधारित नींव को कई तरीकों से सारगर्भित कर सकते हैं। परंतु अपने उद्देश्यों के लिए हम केवल दो दिशाओं में देखेंगे। पहली, हम उन तीन आधारभूत रणनीतियों पर ध्यान देंगे जिनका अनुसरण बाइबल के लेखकों ने तब किया जब उन्होंने इन विषयों पर कार्य किया। और दूसरी, हम मनुष्यजाति पर बाइबल के उन दृष्टिकोणों पर ध्यान देंगे जो परमेश्वर और सृष्टि के बीच की समानताओं की खोज के लिए महत्वपूर्ण हैं। आइए उन तीनों आधारभूत रणनीतियों के साथ आरंभ करें जिनका प्रयोग बाइबल के लेखकों ने परमेश्वर के विषय में अपने श्रोताओं को सिखाने के लिए किया था।

आधारभूत रणनीतियाँ

पहले के एक अध्याय में, हमने उल्लेख किया था कि मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों ने प्राकृतिक धर्मविज्ञान पर बहुत ध्यान केंद्रित किया था। उन्होंने पवित्रशास्त्र पर ज्यादा ध्यान न देते हुए प्रकृति का अवलोकन करने के द्वारा परमेश्वर के विषय में सीखने का प्रयास किया। और उन्होंने प्रकृति से परमेश्वर के विषय में सत्यों को समझने के लिए तीन औपचारिक रणनीतियों को पहचाना : "निषेध का तरीका," या लैटिन में *"वाया निगेशनिस";* "कारक का तरीका," या *"वाया कौजालिटाटिस"* और "श्रेष्ठता का तरीका," या *"वाया एमीनेनटिआए।"*

अब, पिछली सारी सदियों में, प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञानी सही रूप से सहमत हुए हैं कि हम परमेश्वर के विषय में इन तरीकों से प्रकृति से बहुत कुछ सीख सकते हैं। परंतु प्रोटेस्टेंट लोगों ने इस बात पर भी बल दिया है कि हमें पवित्रशास्त्र में से विशेष प्रकाशन के मार्गदर्शन की आवश्यकता है। पवित्रशास्त्र मानो एक चश्मे के रूप में कार्य करता है जो उन बातों के विषय में स्पष्टता लेकर आता है जिसे परमेश्वर ने सामान्य प्रकाशन में स्वयं के विषय में प्रकट किया है। जैसे जॉन कॉल्विन ने अपनी *इंस्टिट्यूट ऑफ़ क्रिस्चियन रीलिजियन* की पुस्तक 1 के अध्याय 6 के भाग 1 में लिखा है :

> जैसे कमजोर नजरों के लिए . . . चश्मे की सहायता के साथ स्पष्टता से पढ़ा जाता है; वैसे ही पवित्रशास्त्र हमारी नीरसता को दूर करके हमारे मनों के असमंजस से भरे ज्ञान को एकत्रित करता है और हमें स्पष्टता के साथ सच्चे परमेश्वर को दिखाता है।
>
> प्राकृतिक धर्मविज्ञान वह होता है जिसे हम प्रकृति से सीखते हैं। यह उसे परिभाषित करने का सबसे स्पष्ट और सरलतम तरीका होगा कि वह क्या बात

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> कर रहा है। विशेष प्रकाशन यह बताता है कि कैसे परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अपने व्यक्तित्वों में, हमारे चारों ओर के संसार में स्वयं को प्रकृति में नहीं, बल्कि पवित्रशास्त्र में और अंततः मसीह में कैसे प्रकट करता है। और इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि बाइबल हमें बताएगी कि परमेश्वर के अदृश्य गुणों को सृष्टि में हमारे चारों ओर के संसार में स्पष्टता से दिखाया गया है — रोमियों 1; भजन संहिता 8 . . . और जिनके पास आँखें हैं, उनके लिए यह स्पष्ट है। परेशानी यह है कि हमारे पास देखने के लिए आँखें ही नहीं हैं, इसलिए हम अंधे हैं, और इसलिए परमेश्वर ने यह किया है, उसने स्वयं को विशेष रूप से प्रकट किया है, उसने ख़ास तरीके से अंततः मसीह में इसे क्रूस पर प्रकट किया है, जिसकी साक्षी पवित्र वचन, अर्थात् पुराने और नए नियम ने दी है।
>
> — डॉ. जॉश मूडी

> सामान्य प्रकाशन हमेशा विद्यमान रहता है। जब आप आकाश की ओर देखते हो, तो यह सामान्य प्रकाशन है। जब आप नैतिक व्यवस्था को देखते हैं, तो यह सामान्य प्रकाशन है। जब आप लोगों में विवेक को कार्य करते हुए देखते हैं, तो यह सामान्य प्रकाशन है . . . अंततः, सामान्य प्रकाशन केवल एक बात लोगों को दे सकता है, वह यह कि परमेश्वर का अस्तित्व है, कि परमेश्वर सामर्थी है, और कि परमेश्वर अनंत है। परंतु केवल विशेष प्रकाशन के द्वारा ही यह समझा जा सकता है कि अनंतकाल से विद्यमान, सामर्थी परमेश्वर पवित्र, धर्मी, भला, प्रेमी और दयालु है। विशेष प्रकाशन को समझना ऐसा है जैसे कि मुख्य कुँजी को प्राप्त करना, और तब इस कुँजी का प्रयोग सामान्य प्रकाशन को समझने में करना; इसके बाद सब कुछ दृष्टिगोचर और स्पष्ट हो जाता है।
>
> — रेव्ह. डॉ. स्टीफन टोंग, अनुवाद

इन सबको थोड़ा विस्तार से समझाने के लिए हम ध्यान देंगे कि पवित्रशास्त्र में ये तीनों रणनीतियाँ कैसे प्रकट होती हैं। पहला, हम निषेध के तरीके को संक्षेप में देखेंगे। दूसरा, हम कारक के तरीके को और अधिक ध्यान से देखेंगे। और तीसरा, हम श्रेष्ठता के तरीके के महत्व पर ध्यान देंगे। आइए निषेध के तरीके से आरंभ करें।

निषेध का तरीका

संक्षेप में, निषेध का तरीका सृष्टि के साथ परमेश्वर की विपरीतता को दर्शाते हुए परमेश्वर के विषय में सत्यों को एकत्र करता है। बाइबल के लेखकों ने निरंतर परमेश्वर और उसकी सृष्टि के बीच की विपरीतताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है — न केवल पाप और बुराई के साथ विपरीतताओं को बल्कि उन अच्छी विशेषताओं के साथ भी जो परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को दी हैं। और उन्होंने निरंतर यह दर्शाते हुए परमेश्वर को सम्मान दिया है कि वह उनके बीच की तुलनाओं से परे है। इसी कारण, यह दृष्टिकोण प्राथमिक रूप से हमारे ध्यान को परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की ओर आकर्षित करता है। परंतु ऐसा करते हुए, यह परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं पर हमारे ध्यान देने के मंच को तैयार कर देता है। अंततः हम तब तक यह देखना आरंभ नहीं कर सकते कि परमेश्वर हमारे जैसा कैसे है, जब तक हम यह महसूस न कर लें वह हमसे पूरी तरह से भिन्न कैसे है। इसलिए यद्यपि यह अध्याय परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करता है, फिर भी पवित्रशास्त्र का निषेध का तरीका

हमें किसी न किसी तरीके से बार-बार उस महान रहस्य के विषय में याद दिलाता है कि परमेश्वर की सभी विशेषताएँ वास्तव में अकथनीय हैं।

निषेध के तरीके के विपरीत, दूसरी आधारभूत रणनीति, अर्थात् कारक का तरीका प्राथमिक रूप से परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित है।

कारक का तरीका

पवित्रशास्त्र में, कारक का तरीका परमेश्वर की तुलना उसके द्वारा बनाई गई अच्छी वस्तुओं के साथ करने के द्वारा इस बात को समझने के मार्ग को खोलता है कि कैसे परमेश्वर हमारे जैसा है। सामान्य अनुभव हमें सिखाता है कि एक कलाकृति अपने कलाकार की कुशलताओं, मनोभावों और विचारों को दर्शाती है। और संगीत की एक रचना अपने संगीतकार की प्रतिभाओं और कल्पनाओं को दर्शाती है। परिणामस्वरूप, हम उनकी कृतियों के द्वारा कलाकार और संगीतकार के विषय में बहुत कुछ सीख सकते हैं। कई रूपों में, बाइबल के लेखकों ने लगभग ऐसा ही किया जब उन्होंने उन वस्तुओं का अवलोकन करने के द्वारा अपने निष्कर्ष निकाले जिन्हें परमेश्वर ने रचा था। यह जानते हुए कि परमेश्वर "पहला कारक" या सृष्टिकर्ता है, उन्होंने परमेश्वर के द्वारा सृष्टि को प्रदान की गई अच्छी विशेषताओं पर ध्यान देने के द्वारा यह अनुमान लगाया कि उसके विषय में क्या सत्य होना चाहिए।

पवित्रशास्त्र कारक के तरीके का प्रयोग दो प्राथमिक तरीकों से करता है। पहला, यह परमेश्वर और उसकी रचना के बीच सीधी-सीधी तुलनाओं को प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, सुनिए भजन संहिता 94:9 इस रणनीति का प्रयोग किस प्रकार करता है :

> **जिसने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता? जिसने आँख रची, क्या आप नहीं देखता? (भजन 94:9)**

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने "कान दिया" और "आँख रची," इसलिए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि स्वयं परमेश्वर के पास "सुनने" और "देखने" की क्षमता है।

एक सुंदर परमेश्वर की अपेक्षा और कैसा परमेश्वर इस पृथ्वी की सुंदरता को रच सकता है? एक व्यवस्थित परमेश्वर की अपेक्षा और कैसा परमेश्वर क्रम-व्यवस्था को रच सकता है? एक जीवित परमेश्वर की अपेक्षा और कैसा परमेश्वर जीवन दे सकता है? परमेश्वर के द्वारा बनाई गई अच्छी वस्तुओं पर ध्यान देने के द्वारा हम परमेश्वर के बारे इतने सत्यों को सीख सकते हैं जिनका कोई अंत नहीं है।

प्रत्यक्ष तुलनाओं के अतिरिक्त, बाइबल के लेखकों ने तब कारक के तरीके का प्रयोग भी किया जब उन्होंने परमेश्वर और उसकी सृष्टि के बीच अलंकारिक तुलना की। कई बार इन तुलनाओं में अमूर्त वस्तुएँ भी सम्मिलित हुईं। उदाहरण के लिए, यशायाह 10:17 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **इस्राएल की ज्योति तो आग ठहरेगी, और इस्राएल का पवित्र ज्वाला ठहरेगा; और वह उसके झाड़-झंखाड़ को एक ही दिन में भस्म करेगा। (यशायाह 10:17)**

जैसा कि इस अनुच्छेद का विस्तृत संदर्भ दर्शाता है, परमेश्वर अश्शूर के साम्राज्य को नष्ट करने वाला था। यह स्पष्ट करने के लिए कि यह कैसे होगा, यशायाह ने परमेश्वर का उल्लेख उपमा के तौर पर "आग" और "ज्वाला" के रूप में किया जो कि "भस्म" कर देगी। वास्तव में, यशायाह ने आग की भस्म करने की शक्ति और परमेश्वर की भस्म करने की सामर्थ्य के बीच की समानताओं को प्रकट किया।

इस प्रकार के तर्क परमेश्वर की अन्य उपमाओं में भी पाए जाते हैं, जैसे कि वे जो भजन 18:2 में प्रकट होते हैं, जहाँ भजनकार कहता है :

> **यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ . . . है; मेरा ईश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं शरणागत हूँ, वह मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का सींग, और मेरा ऊँचा गढ़ है। (भजन 18:2)**

यहाँ हम देखते हैं कि भजनकार ने परमेश्वर की तुलना कई ऐसी वस्तुओं के साथ की जिन्हें परमेश्वर ने बनाया था : बड़ी "चट्टान" या शिलाखंड, "गढ़," "ढाल," "सींग" और "ऊँचा गढ़।" उसने ऐसा यह व्यक्त करने के लिए किया कि कैसे परमेश्वर में उसे बचाया था और उसके शत्रुओं से उसकी रक्षा की थी।

पवित्रशास्त्र परमेश्वर की तुलना जानवरों से भी करता है। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 32:10-11 में मूसा ने कहा :

> **[परमेश्वर] ने [याकूब] के चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की . . . और . . . उसकी सुधि रखी। जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है। (व्यवस्थाविवरण 32:10-11)**

और इसी के अनुरूप भजन 91:4 हमें बताता है :

> **[परमेश्वर] तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके पैरों के नीचे शरण पाएगा। (भजन 91:4)**

जैसे कि ये और बाइबल के कई अन्य अनुच्छेद सुझाव देते हैं, ऐसे बहुत से तरीके हैं जिनमें बाइबल परमेश्वर और उसकी सृष्टि के बीच की समानताओं की ओर संकेत करती है। और बाइबल-आधारित यह प्रमुख दृष्टिकोण एक ऐसी नींव की स्थापना करता है जिस पर ऐसे तरीकों के विषय में खोज की जा सकती है जिनमें परमेश्वर उसके जैसा है जो कुछ उसने रचा है।

> **अलंकारिक तुलनाएँ आवश्यक हैं यदि हमें परमेश्वर और उसकी विशेषताओं को समझना है। हम परमेश्वर को समझ नहीं सकते हैं। परमेश्वर एक बड़े स्तर का मनुष्य मात्र नहीं है। परमेश्वर परमेश्वर है। और इसलिए, जब परमेश्वर स्वयं को हमारी सीमितता में सीमित करता है और स्वयं को हम पर प्रकट करता है, तो वह स्वयं को हम पर ऐसे रूपों में प्रकट नहीं करता जिन्हें हम समझ और बूझ नहीं सकते। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर की दया और अनुग्रह प्रदर्शित होता है जब परमेश्वर स्वयं को हम पर ऐसे रूपों में प्रकट करता है जो ऐसी बातों के साथ जुड़े होते है जिन्हें हम समझ सकते हैं। अतः ये अलंकारिक प्रस्तुतिकरण. ये उदाहरण, ये सदृश्यताएँ, ये रूपक, ये उपमाएँ, ही एकमात्र तरीका है जिसमें हम इस बात को समझने के लिए भवन निर्माण की इकाइयों को एक साथ रखना आरंभ कर सकते हैं कि परमेश्वर कौन है।**
>
> **— डॉ. वौडी बौखम, जूनियर**

निषेध के तरीके और कारक के तरीके की आधारभूत रणनीतियों के अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र तीसरी मध्यकालीन रणनीति के महत्व की पुष्टि भी करता है : श्रेष्ठता का तरीका।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

श्रेष्ठता का तरीका

श्रेष्ठता के तरीके का अर्थ है "वरिष्ठता" या "उच्चता" का तरीका। यह दृष्टिकोण भी परमेश्वर और उसकी सृष्टि के बीच तुलना करने के द्वारा परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को पहचानने में हमारी सहायता करता है। परंतु यह तीसरी रणनीति इस बाइबल आधारित दृष्टिकोण पर आधारित है कि जब परमेश्वर अपनी सृष्टि के जैसा है, तब भी वह सदैव उससे श्रेष्ठ, कहीं अधिक महान है जिसकी उसने रचना की है। जैसा कि पौलुस ने 1 तीमुथियुस 6:15-16 में लिखा है :

> **जो परमधन्य, और एकमात्र अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है, और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है। उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानयुग रहेगा। (1 तीमुथियुस 6:15-16)**

परमेश्वर को "अधिपति," "राजा," और "प्रभु" कहने के द्वारा पौलुस ने यह पुष्टि की कि परमेश्वर कई रूपों में मानवीय अधिपतियों, राजाओं और प्रभुओं के समान है। परंतु इस पर भी ध्यान दें कि कैसे पौलुस ने अन्य सब बातों पर परमेश्वर की श्रेष्ठता पर बल दिया। वही "*एकमात्र* अधिपति," "राजाओं का राजा" और "प्रभुओं का प्रभु" है। केवल परमेश्वर ही अमर है और केवल वही अगम्य ज्योति में रहता है।

संपूर्ण पवित्रशास्त्र में, हम पाते हैं कि परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को सामर्थ्य, जटिलता, विशालता, भलाई, अद्‌भुत बातों आदि के साथ सुसज्जित किया है। और इनमें तथा कई अन्य रूपों में, परमेश्वर और उसकी सृष्टि में समानताएँ हैं। परंतु जहाँ यह बात है, वहीं पवित्रशास्त्र निरंतर यह भी स्पष्ट करता है कि परमेश्वर की सामर्थ्य, जटिलता, विशालता, भलाई और अद्‌भुत कार्य बहुत बड़े हैं, उन सब वस्तुओं से बहुत परे जो सृष्टि में विद्यमान हैं। और इस भाव में, पवित्रशास्त्र में श्रेष्ठता का तरीका हमें यह याद रखने में सहायता करता है कि परमेश्वर हमारे जैसा होने पर भी हमसे श्रेष्ठ है।

अतः हम देखते हैं कि बाइबल के लेखकों ने परमेश्वर के विषय में सत्यों को पहचानने के लिए तीन पारंपरिक रणनीतियों का अनुसरण किया है — निषेध का तरीका, कारक का तरीका और श्रेष्ठता का तरीका। और इन्हें एक साथ लेने पर ये तीनों रणनीतियाँ यह खोजने के लिए बाइबल आधारित मजबूत नीवों की स्थापना करती हैं कि विधिवत धर्मविज्ञान में परमेश्वर अपनी सृष्टि के जैसा कैसे है।

ऐसी तीन आधारभूत रणनीतियों पर ध्यान देने के बाद जो परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं का अनुसरण करने लिए बाइबल आधारित नींव को स्थापित करने में सहायता करती हैं, अब हमें इस ओर मुड़ना चाहिए कि कैसे मनुष्यजाति के विषय में बाइबल के महत्वपूर्ण दृष्टिकोण यह भी प्रकट करते है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के जैसा है।

मनुष्यजाति के विषय में दृष्टिकोण

पवित्रशास्त्र गवाही देता है कि सृष्टि सामान्यतः कई रूपों में परमेश्वर जैसी ही है। और हम उसकी सृष्टि का ध्यान से अध्ययन करने के द्वारा परमेश्वर के विषय में बहुत कुछ सीख सकते हैं। परंतु पवित्रशास्त्र यह भी सिखाता है कि हम विशेषकर मनुष्यों के विषय में चिंतन करने के द्वारा परमेश्वर के विषय में और भी अधिक सीख सकते हैं। परमेश्वर ने मनुष्य को सृष्टि के किसी भी अन्य पहलू से अधिक अपने समान होने का गौरव दिया है। और यह सदृश्यता परमेश्वर की कथनीय सिद्धताओं की खोज करने के लिए एक दृढ़ बाइबल-संबंधी आधार को स्थापित करती हैं।

आधुनिक विज्ञान ने हमें ब्रह्मांड की विशालता के विषय में अधिक जागरूक कर दिया है। अतः मनुष्यों के महत्व को कम आंकना सरल है। हम हमारे ग्रह पर छोटे-छोटे कणों के समान हैं। हमारा ग्रह

हमारी सौर प्रणाली में एक नीले बिंदु से बड़ा नहीं है। हमारी सौर प्रणाली हमारे आकाशपुंज का एक छोटा सा भाग ही है। और पूरे ब्रह्मांड में असंख्य, गहन आकाशपुंज हैं। इसी कारण, ऐसा प्रतीत होता है कि जब हम परमेश्वर के विषय में सीखना चाहते हैं तो विचार किए जाने के लिए मनुष्य बहुत ही महत्वहीन है। परंतु हम चाहे जितने भी छोटे क्यों न हों, फिर भी पवित्रशास्त्र सिखाता है कि वास्तविकता में मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि का मुकुट हैं। जैसा कि हम भजन 8:3-5 में पढ़ते हैं :

> जब मैं आकाश को जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। (भजन 8:3-5)

जैसे कि यह अनुच्छेद हमें बताता है, मनुष्यजाति आकाशमंडल की तुलना में छोटी और महत्वहीन प्रतीत हो सकती है। परंतु दिखावट के बावजूद भी, परमेश्वर ने हमें "परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है" और "महिमा और प्रताप का मुकुट [हमारे] सिर पर रखा है।"

जैसे कि इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 2:5-9 में स्पष्ट किया है, स्वर्गदूतों के प्रति मनुष्यजाति की अधीनता भी केवल अस्थाई ही है। जब मसीह का महिमा में पुनरागमन होगा, तो उसका अनुसरण करनेवाले मनुष्य महानतम आत्मिक प्राणियों से भी ऊँचे किए जाएँगे। उत्पत्ति 1:26 में पवित्रशास्त्र तब सबसे पहले मनुष्य के विशेष स्तर को स्वीकार करता है जब परमेश्वर ने यह कहा :

> हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ। (उत्पत्ति 1:26)

जैसे कि हम यहाँ पर देखते हैं, अन्य सब रचित प्राणियों से अलग मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और समानता में हैं।

अब, मनुष्यजाति के विषय में बाइबल की संपूर्ण शिक्षा इस अध्याय के कार्यक्षेत्र से बहुत बड़ी है। परंतु यहाँ अपने उद्देश्यों के लिए हम केवल इस बात पर ध्यान देंगे कि "स्वरूप" और "समानता" जैसी अभिव्यक्तियाँ अभिपुष्ट करती हैं कि मनुष्य सृष्टि के किसी भी अन्य पहलू से अधिक परमेश्वर के सदृश हैं। परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने जैसा रचा ताकि हम उसकी महिमा के लिए पृथ्वी को भरने और उस पर अधिकार करने के द्वारा उसके राजकीय और याजकीय प्रतिनिधियों के समान सेवा कर सकें। आरंभ में, हमारे पहले माता-पिता निर्दोष थे। परंतु बाद में, परमेश्वर के विरूद्ध पाप और विद्रोह ने मनुष्य के अस्तित्व के प्रत्येक पहलू को भ्रष्ट भ्रष्ट कर दिया। परंतु उत्पत्ति 9:6 और याकूब 3:9 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं कि पापी, विद्रोही मनुष्य भी परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता में होने के रूप में सम्मान पाना निरंतर जारी रखते हैं। और इससे भी बढ़कर, परमेश्वर उन पुरूषों और स्त्रियों को बुलाता और तैयार करता है जिन्हें मसीह ने उनके पापों से फिरने और उसकी समानता में नया बनने के लिए छुड़ाया है। जैसे कि हम इफिसियों 4:22-24 में पढ़ते हैं :

> तुम पिछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है। (इफिसियों 4:22-24)

क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और समानता में हैं, इसलिए पवित्रशास्त्र परमेश्वर की तुलना मनुष्यों के साथ करने के द्वारा बार-बार यह प्रकट करता है कि परमेश्वर कौन है। कुछ ही उदाहरणों का यहाँ उल्लेख करें तो मत्ती 7:11 जैसे अनुच्छेद परमेश्वर का उल्लेख पिता के रूप में करते हैं और उसकी

तुलना मानवीय पिताओं से करते हैं। यशायाह 5:1-7 और यूहन्ना 15:1 जैसे अनुच्छेद परमेश्वर की तुलना एक किसान के साथ करते हैं। गिनती 23:21 और 1 तीमुथियुस 1:17 जैसे स्थानों पर परमेश्वर का वर्णन एक राजा के रूप में किया गया है। और उत्पत्ति 48:15 और इब्रानियों 13:20 जैसे स्थानों पर परमेश्वर की तुलना एक चरवाहे के साथ गई है। यशायाह 54:5 जैसे अनुच्छेदों में परमेश्वर को एक पति की समानता में दर्शाया गया है; और यह सूची आगे बढ़ती रहती है। निस्संदेह, श्रेष्ठता का तरीका हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर किसी भी मानवीय पिता, किसान, राजा, चरवाहे या पति से श्रेष्ठ है। परंतु ये और अन्य असँख्य तुलनाएँ दर्शाती हैं कि हम मनुष्यों के विषय में अपनी समझ के द्वारा परमेश्वर के विषय में बहुत कुछ सीख सकते हैं।

> यह प्रश्न उठाया जाता है कि क्या इस प्रक्रिया में हम स्वयं के विषय में कम से कम कुछ जागरूकता को प्राप्त किए बिना परमेश्वर और उसकी विशेषताओं के विषय में जागरूक हो सकते हैं या नहीं। और इसका उत्तर यह है कि ये दोनों वास्तव में सदैव एक साथ चलते हैं। जॉन कॉल्विन इस बिंदु को अपनी पुस्तक इंस्टिट्यूट ऑफ़ क्रिस्चियन रिलीजियन के अभिन्न अंग के रूप में जोड़ता है। आरंभ में आपके पास परमेश्वर के विषय में ज्ञान और स्वयं के विषय में ज्ञान होता है। परमेश्वर के विषय में ज्ञान के बिना, स्वयं के विषय में कोई ज्ञान नहीं होता है . . . हमारी रचना उसके निकट आने के लिए की गई है, और इसलिए उसके विषय में ज्ञान हमें स्वयं के ज्ञान के निकट लाता है। और तब स्वयं के विषय में सच्चा ज्ञान उसे जानने का भी अभिन्न अंग है।
>
> — डॉ. रिचर्ड फिलिप्स

कलीसिया के संपूर्ण इतिहास में, मसीही धर्मविज्ञानियों ने विभिन्न तरीकों को दर्शाया है जिनमें मनुष्य परमेश्वर के समान हैं। परंतु कुल मिलाकर, उन्होंने तीन मुख्य मानवीय विशेषताओं पर ध्यान दिया है। हम इन विशेषताओं पर इस अध्याय में बाद में ध्यान देंगे, इसलिए इस समय हम केवल इन तीन मानवीय विशेषताओं का अवलोकन प्रदान करेंगे।

पहला, धर्मविज्ञानियों ने उस बात पर बल दिया है जो पवित्रशास्त्र मनुष्य के बौद्धिक चरित्र के विषय में शिक्षा देता है। यद्यपि पाप में हमारे पतन ने हमारे मनों को भ्रष्ट कर दिया है, फिर भी हम बौद्धिक रूप से इस पृथ्वी के अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ हैं। यह निश्चित है कि परमेश्वर की बुद्धि मनुष्य की बुद्धि से अधिक श्रेष्ठ है, परंतु फिर भी रचित प्राणियों के रूप में हमारी बौद्धिक योग्यताएँ हमें परमेश्वर के समान बनाती हैं। जैसे कि बाइबल हमें बताती है, बहुत से रूपों में परमेश्वर लगभग हमारे समान ही सोचता है, योजना बनाता है और तर्क-वितर्क करता है।

दूसरा, धर्मविज्ञानियों ने सदैव मनुष्यों के स्वैच्छिक चरित्र पर बल दिया है, अर्थात् इस तथ्य पर कि परमेश्वर ने हमें मानवीय इच्छा प्रदान की है। एक बार फिर से, पाप ने मानवीय इच्छा को भ्रष्ट कर दिया है, परंतु एक चट्टान या किसी अन्य अमूर्त वस्तु के विपरीत, परमेश्वर ने हमें चुनने की योग्यता प्रदान की है। निस्संदेह, हम जानते हैं कि परमेश्वर की इच्छा मनुष्य की इच्छा से कहीं अधिक श्रेष्ठ है, परंतु हमारी इच्छा को क्रियान्वित करने की हमारी योग्यता हमें परमेश्वर के जैसा ही बनाती है।

तीसरा, धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के साथ हमारी समानता के एक अन्य तरीके के रूप में मनुष्यों के नैतिक चरित्र पर बल दिया है। किसी भी अन्य शारीरिक प्राणी के विपरीत, हमारे विचारों और चुनावों में नैतिक विशेषताएँ पाई जाती हैं। अब, परमेश्वर का नैतिक चरित्र पूरी तरह से सिद्ध है, और इसलिए, उन सब बातों से ऊँचा है जिन्हें हम कभी प्राप्त कर सकें। परंतु फिर भी, स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के साथ-साथ मनुष्यों को भी उन चुनावों की नैतिक विशेषताओं के लिए उत्तरदायी ठहराया जाता है।

इस अध्याय में बाद में, हम यह देखेंगे कि कैसे इन तीन मानवीय विशेषताओं पर बाइबल के बल ने विधिवत धर्मविज्ञानियों को परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं की खोज करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया है। पवित्रशास्त्र मानवीय अस्तित्व की बौद्धिक, स्वैच्छिक और नैतिक विशेषताओं के बारे में जो कहता है उसने इस औपचारिक विचार-विमर्श में मुख्य स्थान ले लिया है कि कैसे परमेश्वर अपनी सृष्टि के जैसा है।

अब जबकि हमने इस बात की खोज करने के लिए बाइबल आधारित नींव पर चर्चा कर ली है कि परमेश्वर कैसे हमारे जैसा है, इसलिए हम अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर बढ़ सकते हैं : इस विषय के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण जो औपचारिक विधिवत धर्मविज्ञान में विकसित हुए हैं।

धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण

उन विभिन्न तरीकों को स्वीकार करना एक बात है जिनमें पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के जैसा है। परंतु, जैसे कि हम देखने वाले हैं, इस बात को समझना बिल्कुल अलग बात है कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञानियों ने इन बाइबल आधारित नीवों पर अपने अध्ययन का निर्माण किया है। पारंपरिक मसीही धर्मविज्ञानियों ने पूरी सटीकता के साथ यह निर्धारित करने का प्रयास किया है कि कैसे परमेश्वर की सिद्धताएँ, अर्थात् उसकी असीमित, अनंत, और अपरिवर्तनीय सिद्धताएँ कथनीय हैं। और ऐसा करने के लिए, उन्होंने कई महत्वपूर्ण प्रश्नों को पूछा है। उदाहरण के लिए, ये विशेषताएँ कौन सी हैं? वे सृष्टि में कैसे प्रकट होती हैं, विशेषकर मनुष्यों में? और परमेश्वर-विज्ञान के इस पहलू पर स्पष्ट दृष्टिकोणों की रचना करने का सर्वोत्तम तरीका कौनसा है?

परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं पर इन धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों का वर्णन करने के कई तरीके हैं। परंतु हम केवल चार विषयों को ही स्पर्श करेंगे। पहला, हम उन दो प्रक्रियाओं को सारगर्भित करेंगे जिनका अनुसरण पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञानियों ने इस विषय का अध्ययन करते समय किया है। दूसरा, हम ऐसे कई ऐतिहासिक प्रलेखों पर ध्यान देंगे जो इन ईश्वरीय सिद्धताओं पर प्रोटेस्टेंट दृष्टिकोणों की मुख्यधारा को प्रस्तुत करते हैं। और तीसरा, हम विधिवत धर्मविज्ञान में परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के संगठन की खोज करेंगे। और चौथा, हम इन औपचारिक दृष्टिकोणों के कई अर्थों पर ध्यान देंगे। आइए उन प्रक्रियाओं के साथ आरंभ करें जिनका अनुसरण विधिवत धर्मविज्ञानियों ने किया है।

प्रक्रियाएँ

जैसा कि हमने पहले के एक अध्याय में कहा था, एक चुनौती जिसका विधिवत धर्मविज्ञानी सामना करते हैं, वह यह है कि परमेश्वर की विशेषताओं के विषय में बाइबल आधारित शिक्षाएँ संपूर्ण पवित्रशास्त्र में बिखरी हुई हैं। बाइबल हमें कभी परमेश्वर की विशेषताओं के विषय में एक पूर्ण, आधिकारिक सूची प्रदान नहीं करती है, और यह विधिवत रूप से उनको परिभाषित या स्पष्ट भी नहीं करती है। अतः अपने कार्य को पूरा करने के लिए विधिवत धर्मविज्ञानियों को इन विभिन्न आकृतियों और रंगों को समझना पड़ा, और उन्हें संयोजित चित्रों या रंगीन कांच की खिड़कियों में वैसे संश्लेषित करना पड़ा जैसे वे थे। ये “खिड़कियाँ,” तब हमें परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के स्पष्ट विचार प्रदान करती हैं। इन संश्लेषणों की रचना करने के लिए विधिवत धर्मविज्ञानियों ने कई प्रक्रियाओं का प्रयोग किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

समय को ध्यान में रखते हए, हम कई प्रक्रियाओं में से केवल उन दो का ही अध्ययन करेंगे जिनका अनुसरण विधिवत धर्मविज्ञानियों ने किया है। पहली, हम यह समीक्षा करेंगे कि उन्होंने तकनीकी शब्दों का प्रयोग कैसे किया है। और दूसरी, हम ध्यान देंगे कि उन्होंने धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना कैसे की है। आइए तकनीकी शब्दों के उनके प्रयोग को देखें।

तकनीकी शब्दावली

पवित्रशास्त्र परमेश्वर की सिद्धताओं को दर्शाने के लिए शब्दावली की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रयोग करती है। वास्तव में, बाइबल के लेखकों ने अक्सर समान अवधारणा को दर्शाने के लिए विभिन्न अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया है। और उन्होंने विभिन्न अवधारणाओं को दर्शाने के लिए विभिन्न अनुच्छेदों के समान शब्दों का प्रयोग भी किया है।

अतः परमेश्वर की विशेषताओं के विषय में बाइबल आधारित शिक्षाओं के विश्वासयोग्य संश्लेषणों की रचना करने के लिए धर्मविज्ञानियों ने तकनीकी शब्दों को अपनाया है। दूसरे शब्दों में, उन्होंने कुछ अभिव्यक्तियों का प्रयोग करने और इन अभिव्यक्तियों को विशेष अर्थ प्रदान करने का चुनाव किया है। अब यदि प्रत्येक धर्मविज्ञानी ने बिलकुल समान तरीकों में समान तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया हो, तो परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं की औपचारिक चर्चा बहुत ही सरल होगी। परंतु वे ऐसा नहीं करते। उदहारण के लिए, कुछ धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की "बुद्धि" के विषय में एक विस्तृत श्रेणी के रूप में बात की है जिसमें परमेश्वर का "ज्ञान" भी सम्मिलित होता है। परंतु अन्य धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के "ज्ञान" और "बुद्धि" के बीच बड़े अंतर को दर्शाने पर बल दिया है। इसी तरह से, कुछ धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की "भलाई" को विस्तृत श्रेणी के रूप में दर्शाया है। उन्होंने उसे भी सम्मिलित किया है जिसे पवित्रशास्त्र उसकी भलाई की अभिव्यक्तियों के रूप में परमेश्वर के "अनुग्रह," "दया," "प्रेम" और ऐसे अन्य संबंधित शब्दों के विषय में सिखाता है। वहीं, अन्य धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की भलाई, अनुग्रह, दया और प्रेम को बहुत ही विशिष्ट रूपों में परिभाषित किया है।

इन और अन्य समान कारणों से यह सदैव महत्वपूर्ण होता है कि उन विशेष शब्दों की अधिक चिंता न की जाए जिनको विधिवत धर्मविज्ञानी प्रयोग करने के लिए चुनते हैं। सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञान का लक्ष्य पवित्रशास्त्र की *अवधाराणाओं* के विश्वासयोग्य सारांशों की रचना करना है, न कि पवित्रशास्त्र की विविध शब्दावली की नकल करना। और परमेश्वर के विषय में बाइबल आधारित अवधारणाओं को विभिन्न प्रकार के तकनीकी शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है।

> धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की विशेषताओं को कई विभिन्न तरीकों में वर्गीकृत, या मैं ऐसे कहूँ कि संगठित किया है। और वास्तव में, यह सब केवल इस बात को बेहतर रीति से समझने का एक तरीका है कि परमेश्वर कौन है। और इसलिए जब हम परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में बात करते हैं . . . उदाहरण के लिए, प्रेम और सत्य जैसी बातें। तथा और भी कई बातें हैं जिन्हें हम सूचीबद्ध कर सकते हैं। कुछ लोगों की सूचियाँ छोटी होती हैं; कुछ लोगों की बड़ी होती हैं। फिर से, उन सब भिन्न-भिन्न तरीकों में से इसके विषय में सोचने का सबसे सरल तरीका यह है कि ऐसी कौनसी बातें हैं जिनके समान मनुष्य को होना है, जिनके समान उन्हें कार्य करना है, जिनके समान परमेश्वर है और जिन्हें परमेश्वर करता है?
>
> — रेव्ह. वर्मोन पीरी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तकनीकी शब्दों को विभिन्न तरीकों से प्रयोग करने की प्रक्रिया के अतिरिक्त हमें यह भी प्रदर्शित करना चाहिए कि विधिवत धर्मविज्ञानियों ने कैसे इस बात को स्पष्ट करने के लिए धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों का प्रयोग किया है कि कैसे परमेश्वर हमारे जैसा है।

धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य

धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य विधिवत धर्मविज्ञान के प्रत्येक पहलू की आधारभूत निर्माण इकाइयाँ हैं। विस्तृत रूप में कहें तो, धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य एक ऐसा कथन है जो बिलकुल प्रत्यक्ष रूप में कम से कम एक तथ्यात्मक धर्मवैज्ञानिक दावे की पुष्टि करता है। अब, परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं की ओर यह सीधा दृष्टिकोण बहुत ही सरल सा दिखाई देता है; परंतु पवित्रशास्त्र परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को भिन्न-भिन्न साहित्यिक शैलियों में प्रकट करता है : जैसे विवरण, काव्य, व्यवस्था, भविष्यद्वाणी, पत्रियाँ इत्यादि। और इनमें से प्रत्येक शैली में परमेश्वर के विषय में सत्यों को व्यक्त करने के विभिन्न तरीके पाए जाते हैं। अतः इन बाइबल आधारित शिक्षाओं के तार्किक रूप से स्पष्ट प्रस्तुतिकरण की रचना करने के लिए विधिवत धर्मविज्ञानियों को बाइबल की प्रत्येक शैली से धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों को लेना पड़ा।

धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों को प्राप्त करने की प्रक्रिया बाइबल के अन्य अनुच्छेदों की तुलना में कुछ अनुच्छेदों में सरल है। उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र में ऐसे कई दावे हैं जो पहले से परमेश्वर की सिद्धताओं के विषय में तर्क-वाक्यों के रूप में हैं। भजन 34:8 में दाऊद का काव्यात्मक गीत हमें बताता है, “यहोवा भला है।” 1 यूहन्ना की पत्री 4:8 में हम पढ़ते हैं कि “परमेश्वर प्रेम है।” इस प्रकार के बाइबल आधारित तर्क-वाक्य परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में औपचारिक धर्मवैज्ञानिक विचार-विमर्श में सरलता से व्यवस्थित हो जाते हैं।

पवित्रशास्त्र के अन्य भाग परमेश्वर के अधिक प्रत्यक्ष विवरण प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, यशायाह की भविष्यद्वाणीय पुस्तक के 1:4 में हम पाते हैं कि परमेश्वर का विवरण “पवित्र” के रूप में किया गया है। यह देखना कठिन नहीं है कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञानियों ने इस विवरण को सरल तर्क-वाक्य में परिवर्तित किया है : “परमेश्वर पवित्र है।“ और व्यवस्थाविवरण 7:9 में व्यवस्था की शैली में परमेश्वर का वर्णन “विश्वासयोग्य ईश्वर” के रूप में किया गया है। दूसरे शब्दों में, “परमेश्वर विश्वासयोग्य है।”

परंतु बाइबल के सभी अनुच्छेद इतनी सरलता से औपचारिक विधिवत धर्मविज्ञान में व्यवस्थित नहीं होते हैं। जब बाइबल के विवरणों पर चर्चा की जाती है, तो हम अक्सर एक ही कहानी से तर्क-वाक्यों से संबंधित कई विभिन्न कथनों को प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 2 की सृष्टि की कहानी दर्शाती है कि “परमेश्वर सामर्थी है,” कि “परमेश्वर बुद्धिमान है” और कि “परमेश्वर भला है।” उत्पत्ति 19 की सदोम और अमोरा की कहानी दर्शाती है कि “परमेश्वर पवित्र है,” “परमेश्वर दयालु है” और “परमेश्वर न्यायी है।” बाइबल के प्रत्येक विवरण ने विधिवत धर्मविज्ञानियों को परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में विविध तर्क-वाक्यों को प्रदान करने का अवसर दिया है।

हम ऐसे स्थानों पर भी परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को देखते हैं जहाँ बाइबल भाषा के अलंकारों जैसे रूपकों, उपमाओं और समरूपताओं पर बहुत अधिक निर्भर होती है। यह बाइबल के काव्य में विशेष रूप से प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, भजन 89:26 जैसे काव्यात्मक अनुच्छेद, और यशायाह 64:8 जैसे काव्यात्मक अनुच्छेद परमेश्वर को “पिता” कह कर पुकारते हैं — जो एक ऐसा रूपक है जो हमें परमेश्वर के विषय में बहुत सी भिन्न-भिन्न बातें बताता है। परंतु परमेश्वर के “पिता” के बहुमुखी रूपक का प्रयोग करने की अपेक्षा विधिवत धर्मविज्ञानियों का झुकाव “परमेश्वर भला है,” जैसे प्रत्यक्ष तर्क-वाक्य की ओर अधिक रहा है।

भजन 24:8 और निर्गमन 15:3 जैसे काव्यात्मक अनुच्छेद, और यहोशू 23:10 जैसे विवरणात्मक अनुच्छेद परमेश्वर को एक योद्धा के रूप में प्रकट करते हैं। परंतु विधिवत धर्मविज्ञानियों ने सामान्यतः अपने ध्यान को "परमेश्वर सामर्थी है," जैसे तर्क-वाक्य तक सीमित किया है। और भजन 118:27 जैसे काव्यात्मक अनुच्छेदों और 1 यूहन्ना 1:5 की पत्री का आधार, हम कह सकते हैं कि "परमेश्वर ज्योति है।" परंतु विधिवत धर्मविज्ञानियों का झुकाव इस रूपक का अनुवाद ऐसे तर्क-वाक्य के रूप में करने की ओर अधिक रहा है, "परमेश्वर नैतिक रूप से शुद्ध है।"

हम देख सकते हैं कि तुलना के ऐसे अलंकार यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के जैसा है। और कई रूपों में, अलंकारिक भाषा का प्रयोग करना परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में हमारे विचार-विमर्श को बहुत उपयोगी बनाता है। परंतु विधिवत धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के विषय में इन्हीं समान सत्यों को प्रत्यक्ष धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के रूप में प्रस्तुत करने पर अधिक ध्यान दिया है। और ऐसा करने के द्वारा वे परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय पर तार्किक रूप से स्पष्ट शिक्षाओं की रचना करने में सक्षम हुए हैं।

> धर्मवैज्ञानिक पद्धति का प्रश्न पवित्रशास्त्र पर ध्यान देता है क्योंकि पवित्रशास्त्र हमारे संपूर्ण धर्मविज्ञान के लिए प्रमुख स्रोत और परम अधिकार, या मानदंड है। और इसलिए जब हम पवित्रशास्त्र की ओर जाते हैं, तो हम हमेशा यह प्रश्न पूछने, अर्थात् पवित्रशास्त्र का यह धर्मवैज्ञानिक प्रश्न पूछने का प्रयास करते हैं : ऐसी कौनसी बात है जो हमें यहाँ सिखाई जा रही है? अब, पवित्रशास्त्र की गहराई में प्रवेश करते हुए जब हम ऐसा करते हैं, तो तुरंत जिस बात का हम सामना करते हैं वह यह है कि पवित्रशास्त्र विधिवत धर्मविज्ञान या ऐसी किसी बात की नियमावली नहीं है। पवित्रशास्त्र के पास एक व्यापक विवरणात्मक सरंचना है, और निस्संदेह पवित्रशास्त्र का अधिकांश भाग अधिक संक्षिप्त या उचित भाव में एक विवरण ही है। और हमारे पास भजन संहिता भी है, और हमारे पास दृष्टांत भी हैं, और कई अन्य शैलियाँ भी हैं जिनका सामना हम पवित्रशास्त्र में करते हैं। और इसलिए हम महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक प्रश्नों का सामना करते हैं, जैसे कि हम स्वयं को प्रदान किए गए वचन के भाग को समझने से धर्मशिक्षाओं के प्रकारों की ओर कैसे बढ़ते हैं, जिसमें हम वचन के भाग से शिक्षाओं को ऐसे निकालते हैं कि यह धर्मवैज्ञानिक निरूपण और तर्क-वितर्क के लिए उपयोगी बन जाए? और निस्संदेह, पवित्रशास्त्र में ऐसे कई कथन हैं जो कि परमेश्वर के विषय में बिल्कुल सीधे हैं . . .। परंतु फिर . . . ऐसा बहुत सा धर्मविज्ञान है जो हमें पवित्रशास्त्र में दिया गया है, और वह वास्तव में, ऐसे निष्कर्षों को प्राप्त करने की माँग करता है जो लिखी हुई बातों पर आधारित हैं . . . । हमें वचन के लेख को उसके अपने आधार पर समझने के लिए कुछ आधारभूत व्याख्यात्मक सिद्धांतों का प्रयोग करना होगा। और जब हम ऐसा कर लेंगे, तो हम उस अंतर्ज्ञान को प्राप्त कर लेंगे कि परमेश्वर कौन है।
>
> — डॉ. ब्रूस बौगुस

ऐसी कुछ प्रक्रियाओं पर ध्यान देने के बाद जिन्होंने परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं पर आधारित धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को आकार दिया है, अब कुछ ऐसे ऐतिहासिक प्रलेखों पर ध्यान देना सहायक होगा जो यह प्रस्तुत करते हैं कि सुसमाचारिक लोगों ने परमेश्वर-विज्ञान के इस पहलू को कैसे सारगर्भित किया है।

ऐतिहासिक प्रलेख

यदि हमें अग्रणी सुसमाचारिक धर्मविज्ञानियों के कार्यों का सर्वेक्षण करना हो, तो यह शीघ्र ही स्पष्ट हो जाएगा कि परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में उनके दृष्टिकोण सामान्यतः बहुत ही मिलते-जुलते हैं। परमेश्वर कैसे हमारे जैसा है, को व्यक्त करने के लिए हम उन कितनी भी सूचियों का उल्लेख कर सकते हैं जिनका प्रयोग मसीहियों ने संपूर्ण कलीसिया इतिहास में किया है। परंतु इसे सरल बनाने के लिए हम ऐसे तीन ऐतिहासिक प्रलेखों पर ध्यान देंगे जिनका उल्लेख हमने पहले कई बार इस श्रृंखला में किया है। ये प्रलेख उन सामान्य तरीकों को प्रस्तुत करते हैं जिनमें सुसमाचारिक लोगों ने परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के औपचारिक सारांशों को विकसित करने के लिए किया है।

हम इन ऐतिहासिक प्रलेखों की समीक्षा सबसे पहले 1530 में लिखित *ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण* को देखते हुए करेंगे। तब हम 1561 में लिखित *बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण* की जाँच करेंगे। और अंततः हम 1647 में लिखित *वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी* का सर्वेक्षण करेंगे। आइए लूथरन *ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण* के साथ आरंभ करें।

ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण

आपको याद होगा कि *ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण* का पहला सूत्र परमेश्वर की विशेषताओं को इस प्रकार से सारगर्भित करता है :

> **एक ईश्वरीय सार है जिसे परमेश्वर कहा जाता है और जो परमेश्वर है : अनंत, शरीर रहित, अंग रहित, असीमित सामर्थ्य, ज्ञान, और भलाई के साथ।**

यह लेख सबसे पहले उन तत्वों का उल्लेख करता है जिन्हें आम तौर पर परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के रूप में पहचाना जाता रहा है — वह अपनी सृष्टि से कैसे भिन्न है। परंतु विश्वास-अंगीकरण परमेश्वर की सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई का उल्लेख भी करता है। इन तीनों विशेषताओं को आम तौर पर कथनीय विशेषताओं के रूप में पहचाना जाता है, या उन तरीकों के रूप में जिनमें परमेश्वर अपनी सृष्टि के जैसा, और विशेषकर मनुष्यों के जैसा है।

परमेश्वर ने सृष्टि को इन सिद्धताओं में से प्रत्येक के साथ परिपूर्ण किया है, परंतु एक छोटे स्तर पर। भजन 68:34, 35 जैसे अनुच्छेद सिखाते हैं कि परमेश्वर के पास सामर्थ्य है, और उसने अपनी सृष्टि को इसी के समान, परंतु इससे कम, सामर्थ्य के साथ परिपूर्ण किया है। दानिय्येल 2:20, 21 जैसे अनुच्छेद प्रकट करते हैं कि परमेश्वर के पास ज्ञान है और कि उसने ज्ञान की कुछ मात्रा मनुष्यों को प्रदान की है। और भजन 119:68 और 2 पतरस 1:3-5 जैसे अनुच्छेद न केवल यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर भला है, बल्कि यह भी कि उसने अपनी सृष्टि में भलाई को रखा है। अतः पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं पर आधारित होकर हम सही रूप से यह कह सकते हैं कि परमेश्वर की सामर्थ्य, उसका ज्ञान और उसकी भलाई सब कथनीय विशेषताएँ हैं।

ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण में निहित परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, आइए हम अपने दूसरे ऐतिहासिक प्रलेख बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण की ओर मुड़ें, और याद करें कि यह परमेश्वर की विशेषताओं को कैसे प्रकट करता है।

बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण

बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण के पहले सूत्र में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> केवल एक ही सरल और आत्मिक अस्तित्व है जिसे हम परमेश्वर कहते हैं . . . वह अनंत, अबोधगम्य, अदृश्य, अपरिवर्तनीय, असीमित, सर्वशक्तिमान, सिद्ध रूप से बुद्धिमान, न्यायी, भला, और संपूर्ण भलाई का उमड़ता हुआ सोता है।

बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण का यह सूत्र परमेश्वर की विशेषताओं को दस शब्दों के साथ सारगर्भित करता है। पहली छह विशेषताएँ आम तौर पर परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के साथ जुड़ी होती हैं। शेष विशेषताओं — सर्वशक्तिमान, सिद्ध रूप से बुद्धिमान, न्यायी, और भलाई — को आम तौर पर परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के साथ पहचाना जाता है।

ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण के समान बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण उल्लेख करता है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है या कि परमेश्वर के पास सामर्थ्य है; कि वह बुद्धिमान है और कि वह भला है। परंतु यह एक और विशेषता को जोड़ता है जब यह कहता है कि परमेश्वर न्यायी है, या "धर्मी" है, जैसे कि इसे अनूदित किया जा सकता है। इस कथनीय विशेषता के समर्थन में, पवित्रशास्त्र भजन 7:9 जैसे स्थानों में निरंतर परमेश्वर को न्यायी या धर्मी के रूप में संबोधित करता है। होशे 12:6 और 2 तीमुथियुस 3:16 जैसे अनुच्छेद सिखाते हैं कि मनुष्य भी रचित प्राणियों के स्तर पर "धर्मी" या "न्यायी" हो सकते हैं। अतः सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई के अतिरिक्त परमेश्वर की कथनीय विशेषता के रूप में न्याय को सम्मिलित करना निश्चित रूप से उचित है।

यह हमें प्रतिनिधि ऐतिहासिक प्रलेख की ओर लेकर आता है। ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण और बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण की तरह ही वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी भी परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को सूचीबद्ध करता है।

वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी

लघु प्रश्नोत्तरी के चौथे प्रश्न, "परमेश्वर कौन है?" का उत्तर *धर्म-प्रश्नोत्तरी* ऐसे देती है :

> परमेश्वर एक आत्मा, असीमित, अनंत है और अपने अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई, और सत्य में अपरिवर्तनीय है।

इन ईश्वरीय सिद्धताओं में अंतिम सात कथनीय हैं : परमेश्वर का अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई, और सत्य।

ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण और बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण के समान वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी भी ज्ञान, सामर्थ्य और भलाई का उल्लेख करती है। यह परमेश्वर के न्याय को सम्मिलित करने के द्वारा बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण को भी दर्शाती है। परंतु धर्म-प्रश्नोत्तरी परमेश्वर के अस्तित्व या सार, परमेश्वर की पवित्रता और परमेश्वर के सत्य या उसकी विश्वासयोग्यता को भी शामिल करती है। उत्पत्ति 1:1 और यूहन्ना 1:3 जैसे अनुच्छेद स्पष्ट करते हैं कि सृष्टि का सार या अस्तित्व द्वितीयक और परमेश्वर के अस्तित्व पर निर्भर है। परंतु हम फिर भी ऐसे कई रूपों में परमेश्वर के समान हैं। इफिसियों 4:24 के अनुसार पवित्रता परमेश्वर की विशेषता है जो मनुष्यों सहित सृष्टि के कई पहलुओं में प्रदर्शित होती है। और भजन 25:5 जैसे वचनों में सत्य या विश्वासयोग्यता न केवल परमेश्वर की सिद्धता है, बल्कि इसे मनुष्यों को प्रदान भी किया गया है।

> परमेश्वर अपने अस्तित्व, अपने प्रेम, अपनी करुणा, अपनी पवित्रता, अपने न्याय की कुछ विशेषताओं को हमारे सामने प्रकट कर सकता है . . . और शायद इसका सबसे सरल विवरण वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी में पाया जाता है। "परमेश्वर क्या है? परमेश्वर एक आत्मा, असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।" — वे उसकी तीन गैर-कथनीय या अकथनीय विशेषताएँ हैं — "अपने अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य,

> पवित्रता, न्याय, भलाई, और सत्य में।" वे परमेश्वर की कथनीय विशेषताएँ हैं। अतः हम उसकी बाद की विशेषताओं में भागी हो सकते हैं, परंतु असीमित, अनंत या अपरिवर्तनीय होने की विशेषताओं को प्राप्त नहीं कर सकते। और निस्संदेह हम उसकी असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय महानता के लिए उसकी महिमा करते हैं जिसमें हम सहभागी नहीं होते हैं, यह हम ठीक वैसे ही करते हैं जैसे हम उसके अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई, और सत्य के उसके चरित्र में भागी होने की उसके द्वारा दी गई अनुमति के लिए करते हैं।
>
> — डॉ. सैंडर्स जे. विल्सन

यह सूचियाँ इन विषयों पर प्रोटेस्टेंट सुसमाचारिक दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। फिर भी, हमें यह जोड़ना चाहिए कि ये प्रलेख उस प्रत्येक कथनीय विशेषता का उल्लेख नहीं करते जिसे धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के साथ जोड़ा है। अलग-अलग धर्मविज्ञानियों ने अक्सर अन्य कथनीय विशेषताओं की ओर भी संकेत किया है। उदाहरण के लिए, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, कथनीय विशेषता के रूप में परमेश्वर के ज्ञान को सूचीबद्ध देखना सामान्य बात है। और कुलुस्सियों 1:10 जैसे अनुच्छेदों में हम पाते हैं कि परमेश्वर और मनुष्य दोनों ज्ञान को प्रदर्शित करते हैं। परमेश्वर की दया को अक्सर ईश्वरीय सिद्धताओं की इस श्रेणी में गिना जाता है क्योंकि पवित्रशास्त्र लूका 6:36 जैसे अनुच्छेदों में यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर और मनुष्य दोनों दयालु हैं। और निस्संदेह, पवित्रशास्त्र व्यवस्थाविवरण 7:9 जैसे अनुच्छेदों में कथनीय विशेषता के रूप में परमेश्वर के प्रेम पर भी बल देता है।

धर्मविज्ञानियों द्वारा अनुसरण की जानेवाली प्रक्रियाओं और प्रतिनिधि ऐतिहासिक प्रलेखों को देखने के बाद, आइए हम परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं पर आधारित धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के तीसरे पहलू की ओर मुड़ें : विधिवत धर्मविज्ञान में इन विषयों के संगठन।

संगठन

जैसा कि हम देख चुके हैं, विभिन्न प्रतिनिधि ऐतिहासिक प्रलेख और अग्रणी धर्मविज्ञानियों ने विभिन्न तरीकों से परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को सूचीबद्ध किया है। दुखद रूप से, यह विविधता अक्सर अनुभवहीन विद्यार्थियों की अगुवाई इस संघर्ष की ओर करती है कि ईश्वरीय विशेषताओं की इन सूचियों में से कौन सी सूची सही है। परंतु वास्तविकता में, परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं का एक आधारभूत संगठन है। और यह तार्किक संगठन यह देखने में हमारी सहायता करता है कि सुसमाचारिक लोगों में इस बात के ऊपर वास्तव में बहुत एकता है कि कैसे परमेश्वर हमारे जैसा है।

इस अध्याय में पहले हमने देखा था कि मनुष्यों के पास किसी सृष्टि की अन्य किसी भी वस्तु से अधिक परमेश्वर के जैसा बनने का विशेषाधिकार है। और इसी कारण, पवित्रशास्त्र अक्सर परमेश्वर का वर्णन मानवीय विशेषताओं में करता है। कई रूपों में, परमेश्वर और मनुष्यत्व के बीच की समानताओं पर बाइबल का ध्यान विधिवत धर्मविज्ञान में परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को संगठित करने के प्रति महत्वपूर्ण रहा है।

> अब तक की सदियों में विधिवत धर्मविज्ञानियों और विश्वास कथनों और अंगीकरणों इत्यादि ने कई विभिन्न तरीकों से परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को संगठित किया है . . . परंतु कुल मिलाकर, जब आप देखते हैं, और आप इस तरह के प्रश्न पूछना आरंभ करते हैं कि इसे पहले क्यों लिया गया है, और इसे दूसरे स्थान पर और इसे तीसरे स्थान पर क्यों लिया गया है, तो जिस मुख्य सिद्धांत को आप यहाँ बार-बार विभिन्न तरीको में प्रकट होता देखते हैं, वह यह है

> कि लोग परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को उन तरीकों में संगठित करते हैं जिनमें वे समझते हैं कि लोग कौन हैं। और इसका कारण यह है कि क्योंकि हम परमेश्वर के स्वरूप और समानता में हैं और परमेश्वर की कथनीय विशेषताएँ वे तरीके हैं जिनमें वह हमारे जैसा है . . .। मेरे कहने का अर्थ यह है कि वास्तव में बाइबल हमें परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं की एक सूची प्रदान नहीं करती है। हम उन्हें पवित्रशास्त्र से निकालते हैं, और इस कारण जब आप परमेश्वर की इन विशेषताओं के विषय में अपनी विचारधारा के रूप में परमेश्वर और लोगों के बीच के संबंध और समानताओं का प्रयोग करते हैं, तो लोगों के विषय में आप जो सोचते हैं वह आपके कार्य करने के संगठन को प्रभावित करता है।
>
> — डॉ. रिचर्ड एल, प्रैट, जूनियर

हम सब जानते हैं कि जीवविज्ञान, मानवविज्ञान, मनोविज्ञान और समाजिक विज्ञान जैसे आधुनिक विज्ञानों ने इसे समझने के विभिन्न तरीके प्रदान किए हैं कि मनुष्य होने का क्या अर्थ है। इनमें से कुछ आधुनिक दृष्टिकोणों के पास देने के लिए बहुत कुछ है; अन्य दृष्टिकोण मनुष्य की सच्ची प्रकृति की गलत व्याख्या करते हैं। परंतु जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान ने ऐसे तीन मुख्य तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया है जिनमें मनुष्य अद्वितीय रूप से परमेश्वर के समान हैं : हमारी बौद्धिक क्षमताएँ, हमारी स्वैच्छिक योग्यताएँ, और हमारा नैतिक चरित्र। परमेश्वर के स्वरूप में होने के अर्थ के इस त्रिभागी मूल्याकंन ने विधिवत धर्मविज्ञानियों द्वारा परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के संगठित किए जाने के कार्य को गहराई से प्रभावित किया है।

सामान्यतः परमेश्वर की सारी कथनीय सिद्धताओं को ईश्वरीय विशेषताओं की ऐसी तीन विस्तृत श्रेणियों बांटा जा सकता है जो उन तरीकों के समान हैं जिनमें मनुष्यजाति परमेश्वर के समान है : परमेश्वर की बौद्धिक विशेषताएँ, उसकी स्वैच्छिक विशेषताएँ और उसकी नैतिक विशेषताएँ।

हम आसानी से देख सकते हैं कि *ऑरसबर्ग विश्वास-अंगीकरण* के पहले सूत्र में उल्लिखित परमेश्वर का ज्ञान, सामर्थ्य, और भलाई कैसे इन तीन विस्तृत श्रेणियों के अनुरूप है। ज्ञान परमेश्वर के मन या मस्तिष्क के विषय में बात करता है और परमेश्वर की बौद्धिक विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। सामर्थ्य परमेश्वर की इच्छा के विषय में बात करती है और परमेश्वर की स्वैच्छिक विशेषताओं को प्रस्तुत करती है। और भलाई परमेश्वर की नैतिक विशेषताओं के विषय में बात करती है।

लगभग यही बात *बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण* में सूचीबद्ध चार कथनीय विशेषताओं के विषय में कही जा सकती है। शब्द बुद्धिमान परमेश्वर की बौद्धिक विशेषताओं की श्रेणी में आता है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर की स्वैच्छिक विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। और शब्द न्यायी, या धर्मी, और भला परमेश्वर की नैतिक विशेषताओं को प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार, *वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी* का चौथा उत्तर भी इसी पद्धति का अनुसरण करता है। परमेश्वर के अस्तित्व या सार की कुछ असामान्य श्रेणी के बाद, ज्ञान परमेश्वर की बौद्धिक विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। सामर्थ्य परमेश्वर की स्वैच्छिक विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। और परमेश्वर की नैतिक विशेषताओं में उसकी पवित्रता, न्याय, भलाई और सच्चाई सम्मिलित होती हैं।

ये अवलोकन दर्शाते हैं कि यद्यपि ये ऐतिहासिक प्रलेख बिल्कुल एक जैसे नहीं हैं, फिर भी वे बहुत विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत नहीं करते हैं। अपनी विविधता के बावजूद भी वे सब परमेश्वर और परमेश्वर के स्वरूप में रचे मनुष्यों द्वारा समान रूप से रखी जानेवाली तीन मुख्य विशेषताओं पर आधारित परमेश्वर की कथनीय सिद्धताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

यह त्रिभागी संगठन हमें अलग-अलग धर्मविज्ञानियों द्वारा दर्शाई गई विविधताओं का मूल्याकंन करने में भी सहायता करता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के ज्ञान को परमेश्वर की बुद्धि के साथ जोड़ना उसकी बौद्धिक विशेषताओं के दो पहलूओं में अंतर करने का एक सरल तरीका है। शब्द सर्वोच्चता को अधिक पारंपरिक शब्द सामर्थ्य के साथ जोड़ना परमेश्वर की स्वैच्छिक विशेषताओं के दो पहलूओं के बीच अंतर करना है। और दया और प्रेम जैसे शब्दों को जोड़ना परमेश्वर की कई नैतिक विशेषताओं के बीच अंतर करना है।

इस प्रकाश में हम भरोसे के साथ कह सकते हैं कि सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञान में इस बात पर गहरी एकता है कि किस बात को परमेश्वर की कथनीय विशेषता माना जाना चाहिए। यद्यपि किसी दुर्लभ अपवाद को छोड़कर इन सिद्धताओं को विभिन्न तरीकों से विकसित करना हमेशा संभव है, फिर भी परमेश्वर की कथनीय विशेषताएँ परमेश्वर की बौद्धिक, स्वैच्छिक और नैतिक विशेषताओं की समान विस्तृत श्रेणियों में विभाजित होने की प्रवृत्ति रखती हैं।

अब जबकि हमने विधिवत धर्मविज्ञानियों द्वारा प्रयोग की गईं प्रक्रियाओं, कई प्रतिनिधि ऐतिहासिक प्रलेखों, और परमेश्वर-विज्ञान के इस पहलू के तार्किक संगठन पर ध्यान देने के द्वारा परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों पर विचार-विमर्श कर लिया है, इसलिए हमें चौथे विचार की ओर मुड़ना चाहिए — इन धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के कुछ व्यावहारिक आशय।

आशय

कई ऐसे तरीके हैं जिनमें हम परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के व्यावहारिक आशयों की खोज कर सकते हैं। परंतु सरलता के लिए, आइए केवल दो दिशाओं की ओर ही देखें। पहली, हम परमेश्वर के विषय में हमारी अपनी अपेक्षाओं को देखेंगे। और दूसरी, हम अपने द्वारा परमेश्वर के अनुकरण का उल्लेख करेंगे। आइए इस प्रकार की अपेक्षाओं के साथ आरंभ करें जिन्हें हमें परमेश्वर के विषय में तब रखना चाहिए जब हम परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं पर विचार करते हैं।

परमेश्वर से अपेक्षाएँ

दुखद रूप से, जब मसीह के बहुत से गंभीर अनुयायी भी परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में सीखते हैं, तो वे इस बात की अक्सर गलत व्याख्या करते हैं कि परमेश्वर ने बाइबल के समयों में कैसे कार्य किया और वे इस विषय में भी झूठी अपेक्षाओं को रखते हैं कि परमेश्वर आज उनके अपने जीवनों में कैसे कार्य करता है। परमेश्वर की विशेषताएँ सदैव उसके विषय में सच्ची हैं। वे आती या जाती नहीं रहती हैं। वे कभी बदलती नहीं हैं। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर की सारी कथनीय विशेषताएँ हर दिन के हर पल में सब लोगों के लिए स्पष्ट हों। जैसे कि बाइबल के असँख्य उदाहरण दर्शाते हैं, परमेश्वर स्वयं कभी नहीं बदलता है, और वह जो कुछ हमारे जीवनों में करता है, वह कभी उसके अस्तित्व के विरोध में नहीं होता। परंतु साथ ही, हम सटीक रूप से यह अनुमान नहीं लगा सकते कि परमेश्वर इतिहास के किसी पल में कैसे कार्य करेगा क्योंकि वह अपनी विशेषताओं को कई विभिन्न तरीकों में प्रदर्शित करता है।

परमेश्वर से बाइबल आधारित अपेक्षाएँ रखने के लिए हमें उस एक अंतर को ध्यान में रखने की आवश्यकता है जिसका उल्लेख हमने इस श्रृंखला में कई बार किया है — परमेश्वर की विशेषताओं और उसके ऐतिहासिक प्रकटीकरणों के बीच अंतर।

जैसा कि हम देख चुके हैं, कथनीय विशेषताओं सहित परमेश्वर की सारी विशेषताएँ असीमित हैं, समय की सीमा में नहीं बंधी हैं और हर प्रकार के परिवर्तन से स्वतंत्र हैं। परंतु जब परमेश्वर अपनी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सीमित, अस्थाई और पविर्तनशील सृष्टि के साथ कार्य करता है, तो वह भिन्न समयों में भिन्न तरीकों से अपनी विशेषताओं को प्रकट करता है। इनमें से कुछ प्रकटीकरण समय की एक लंबी अवधि तक बने रहते हैं। अन्य प्रकटीकरण कभी-कभार केवल यहाँ वहाँ ही प्रकट होते हैं। परंतु सामान्य प्रकाशन और बाइबल के इतिहास का विवरण स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि परमेश्वर अपनी विशेषताओं को ऐसे रूपों में प्रदर्शित करता है जिनका कभी पूरी तरह से अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।

सोचिए कि कैसे यह कथनीय विशेषताओं की तीनों पारंपरिक श्रेणियों के साथ सत्य है। परमेश्वर की बौद्धिक विशेषताएँ सदैव उसके अपने विषय में सत्य हैं। वह सदैव सर्व-ज्ञानी और बुद्धिमान है। परंतु कभी-कभी, परमेश्वर अपने ज्ञान और अपनी बुद्धि को स्पष्ट रूप से बाइबल के इतिहास और आज हमारे जीवनों में प्रकट करता है; और अन्य समयों में वह नहीं भी करता। इसीलिए बाइबल के कुछ पात्रों ने आनंद के साथ उसे स्वीकार किया जो परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया था, वहीं अन्य पात्रों ने परमेश्वर के मन की और अधिक समझ प्राप्त करने की लालसा की।

लगभग इसी रूप में, परमेश्वर की स्वैच्छिक विशेषताएँ कभी परिवर्तित नहीं होतीं। वह सदैव सामर्थी है। परंतु बाइबल के संपूर्ण इतिहास में, और हमारे अपने जीवनों में भी, परमेश्वर कई बार अपनी सामर्थ्य के बड़े कार्यों को प्रकट करता है, और कई बार वह ऐसा नहीं करता। इसीलिए, बाइबल के पात्रों ने कई बार परमेश्वर के सामर्थी कार्यों की प्रशंसा में अपनी आवाजों को ऊंचा उठाया, परंतु अन्य समयों पर उन्होंने पुकारा कि परमेश्वर तब अपनी सामर्थ्य को प्रकट करे जब उन्होंने अपने शत्रुओं के अत्याचार के अधीन दुखों को सहा।

और यही बात परमेश्वर की अपरिवर्तनीय नैतिक विशेषताओं के बारे में भी कहा जा सकता है। परमेश्वर सदैव भला, पवित्र, न्यायी, सच्चा, प्रेमी, दयालु, और अनुग्रहकारी है। परंतु बाइबल का इतिहास और हमारा अपना मानवीय अनुभव कोई संदेह नहीं छोड़ते कि परमेश्वर भिन्न रूपों में इन नैतिक विशेषताओं को प्रकट करता है। कई बार, उसकी भलाई इतनी स्पष्ट होती है कि हम सब इसे देख सकते हैं। परंतु अन्य समयों पर, उसकी भलाई को समझना कठिन होता है। इसीलिए बाइबल के बहुत से पात्रों ने प्राप्त की हुई आशीषों के लिए उसका धन्यवाद किया, वहीं अन्यों ने उन कष्टों और परीक्षाओं के कारण विलाप किया जिनको उन्होंने सहन किया।

जैसे कि ये विभिन्नताएँ दर्शाती हैं, परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं को उन तरीकों से भिन्न रूप से दर्शाना जिनमें वह अपनी इन विशेषताओं को इतिहास में प्रकट करता है, परमेश्वर के विषय में उचित अपेक्षाओं को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।

> मेरे विचार से परमेश्वर का ज्ञान, प्रेम, सामर्थ्य, और इस तरह की बातों को सृष्टि में देख सकने का विषय सामान्यतः स्वयं परमेश्वर की अपेक्षा मानवीय दृष्टिकोण की समस्या है। पवित्रशास्त्र से मेरे लिए एक बहुत ही आवश्यक चेतावनी भजन 73 से आती है जहाँ भजनकार धनी और दुष्ट व्यक्ति की संपन्नता जैसी बात पर विलाप करता है और, "क्योंकि मैं दिन भर मार खाता आया हूँ और प्रति भोर को मेरी ताड़ना होती आई है," परंतु फिर भजन के लगभग बीच के भाग में एक निर्णायक मोड़ आता है जहाँ वह यह कहता है,"यह मेरी दृष्टि में अति कठिन समस्या थी जब तक कि मैंने ईश्वर के पवित्र स्थान में जाकर उन लोगों के परिणाम को न सोचा।" उदाहरण के लिए, अगस्टीन आत्मा की चंगाई की आवश्यकता के विषय में बात कर सकता है, उस पाप ने हम पर ऐसा प्रभाव डाला है कि हम बुरी बातों को सोचते हैं, काम में लाते हैं, और समझते हैं क्योंकि हमारी आत्मा को चंगाई की आवश्यकता है, और जब परमेश्वर कार्य करता है तभी हम वास्तव में समझ सकते हैं और उचित रूप से व्याख्या कर सकते हैं। अतः समस्या परमेश्वर के साथ नहीं है, यह हमारी समझ के साथ है। और मैं

> केवल यह कह सकता हूँ कि जब एक व्यक्ति परमेश्वर के निकट आता है . . . तो आप बस और अधिक स्पष्टता से देखना आरंभ कर देते हैं कि कैसे ये नैतिक विशेषताएँ और परमेश्वर के कार्य प्रकट होते जाते हैं। परंतु यह परमेश्वर की समस्या नहीं है, बल्कि हमारी है।
>
> — डॉ. ब्रूस एल. फ़ील्ड्स

परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के व्यावहारिक आशय परमेश्वर के विषय में हमारी अपेक्षाओं पर ही ध्यान नहीं देते हैं। बल्कि वे हमारे द्वारा परमेश्वर के अनुकरण के महत्व की ओर भी संकेत करते हैं।

परमेश्वर का अनुकरण

पवित्रशास्त्र कभी भी लोगों को परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं का अनुकरण या उनकी नकल करने का प्रयास करने की बुलाहट नहीं देता है। वह हमें असीमित, अनंत या अपरिवर्तनीय बनने के लिए उत्साहित नहीं करता है। इसके विपरीत, पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर की आराधना और स्तुति में स्वयं को नम्र बनने की बुलाहट देता है क्योंकि हम इन रूपों में हम से अद्‌भुत रीति से भिन्न है। परंतु परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के व्यावहारिक आशय एक भिन्न दिशा में आगे बढ़ते हैं। निस्संदेह, हमें इन सिद्धताओं के लिए परमेश्वर की स्तुति करनी है। परंतु बार-बार पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं का अनुकरण करने की बुलाहट देता है।

उदाहरण के लिए, लूका 6:36 में यीशु ने कहा है :

> जैसे तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो। (लूका 6:36)

यहाँ, यीशु ने अपने शिष्यों को परमेश्वर की दया का अनुकरण करने के लिए कहा। और उसने एक स्तर को भी नियुक्त किया कि मनुष्य की दया कैसी होनी चाहिए। यह परमेश्वर की दया की नैतिक विशेषता के जैसी होनी चाहिए।

इफिसियों 4:32 में पौलुस ने भी ऐसे ही निर्देश दिए जब उसने यह लिखा :

> एक दूसरे पर कृपालु और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। (इफिसियों 4:32)

परमेश्वर की कृपा और करुणा में उसकी भलाई का अनुकरण मसीह के सब अनुयायियों के लिए भलाई का मापदंड है। इसी तरह से, 1 पतरस 1:15-16 हमें बताता है :

> पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।" (1 पतरस 1:15-16)

यहाँ लेखक ने परमेश्वर के जैसा बनने की बुलाहट के रूप में लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में पाई जानेवाली पवित्रता की निरंतर बुलाहट की व्याख्या की है।

> पवित्रशास्त्र इस बात में स्पष्ट है कि परमेश्वर पवित्र है, और 1 पतरस में हमें पवित्र बनने के लिए बुलाया गया है क्योंकि वह पवित्र है . . . एक पासबान ने एक

> बार मुझसे यह कहा था कि इस पृथ्वी पर केवल हम ही ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के चरित्र के इस स्वभाव को प्रकट कर सकते हैं, जो कि उसकी पवित्रता है। और इसलिए, जब हम पवित्र बनते हैं, जब हम पवित्रता में चलते हैं, जब हम पाप से फिरते हैं, अर्थात् संसार से अलग एक जीवन बिताते है, तो हम न केवल वह कार्य करते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है, और न केवल हम इसलिए पाप से फिरते हैं क्योंकि उसने हमें यह करने के बुलाया और कहा है, बल्कि हम वास्तव में अन्य लोगों के समक्ष परमेश्वर की महत्वपूर्ण विशेषता को प्रकट करते हैं। और इसलिए संसार हमसे आशा रख सकता है; वे हमारी पवित्रता को देखते हैं, वे देखते हैं कि हम अलग किए हुए हैं, और वे परमेश्वर के स्वभाव की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता को देखते हैं। और इसलिए मेरे विचार से, पवित्रशास्त्र के अनुसार कहूँ तो, हमें पवित्र बनना है क्योंकि वह पवित्र है, और यह कार्य हम न केवल प्रभु को प्रसन्न करने के लिए करते हैं, बल्कि उसके चरित्र को प्रकट करने के लिए भी।
>
> — डॉ. मैट कार्टर

> पुराने और नए नियम दोनों में, परमेश्वर अपने लोगों को वैसे पवित्र बनने के लिए बुलाता है, जैसे वह स्वयं पवित्र है, और इसलिए परमेश्वर की पवित्रता वह पहलू है जिसका प्रत्येक युग में परमेश्वर के लोगों के लिए बहुत अधिक व्यावहारिक महत्व रहा है। और पवित्रता में कम से कम दो बातें शामिल होती हैं। एक ओर, इसका अर्थ है किसी से "अलग होना," और इस संदर्भ में इसका अर्थ है पाप से अलग होना। अतः परमेश्वर के लोग होने के नाते हमें पाप से किसी भी तरह का कोई संबंध न रखने के लिए बुलाया गया है। परंतु फिर सकारत्मक रूप से इसका अर्थ है नैतिक रूप से परमेश्वर के सदृश बनना, अर्थात् उसके उतना समान बनना जितना कोई रचित प्राणी परमेश्वर के समान बन सकता है। और इसलिए हम अपने सब कार्यों में, जहाँ कहीं परमेश्वर हमें रखता है, तथा अपने संबंधों, और व्यवसायों और गतिविधयों के संपूर्ण दायरे में हम अपने सब कथनों और वचनों में परमेश्वर और उसके चरित्र के समान बनने का प्रयास करते हैं।
>
> — डॉ. गाए वॉटर्स

परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं की तीन मुख्य श्रेणियों के आधार पर हमें अपने मन को परमेश्वर के मन के अनुरूप बनाना है। हमें अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनाना है। हमारा नैतिक चरित्र परमेश्वर के नैतिक चरित्र के अनुरूप होना चाहिए। परंतु हमें यहाँ सावधान रहने की आवश्यकता है। जैसे कि हम देख चुके हैं, परमेश्वर जब अपनी सृष्टि के साथ कार्य करता है तो वह अपनी बौद्धिक, स्वैच्छिक और नैतिक विशेषताओं को विभिन्न तरीकों से प्रकट करता है। और कई रूपों में, उस प्रत्येक व्यक्ति को भी ऐसा ही करना चाहिए जो परमेश्वर का अनुकरण करने का प्रयास करता है। परमेश्वर के विचारों को उसके समान सोचने का अर्थ विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न बातें होगा। अपनी इच्छाओं को वैसे क्रियान्वित करने के लिए जैसे परमेश्वर करेगा, हमें विभिन्न समयों में विभिन्न तरीकों से कार्य करना होगा। परमेश्वर के नैतिक चरित्र को प्रदर्शित करने के लिए हमें सही समयों में सही तरीकों से जीवन जीना होगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसी कारण, परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को परमेश्वर का अनुकरण उन सब बातों के प्रकाश में करना चाहिए जिनकी आज्ञा उसने पवित्रशास्त्र में दी है। पवित्रशास्त्र हमारे प्रतिदिन के जीवन को जीने में हमारी अगुवाई के लिए हमें असँख्य निर्देश प्रदान करता है। हम बाइबल की *सारी* शिक्षाओं को लागू करने के द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में परमेश्वर के ज्ञान को प्रकट करना सीखते हैं। हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता में अपनी इच्छा को क्रियान्वित करने के लिए हमें बताए गए *बहुत से* तरीकों का अध्ययन करने के द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में परमेश्वर की सामर्थ्य का अनुकरण करना सीखते हैं। और हम पवित्रशास्त्र के *सब* नैतिक निर्देशों को ध्यान में रखने के द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में परमेश्वर की भलाई का अनुकरण करना सीखते हैं।

हम इस पूरे भरोसे के साथ स्वयं को पवित्रशास्त्र की विभिन्न शिक्षाओं के प्रति समर्पित करते हैं कि पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में कार्य कर रहा है, और हमें उस दिन के लिए तैयार कर रहा है जब हम पूरी तरह से मसीह के सदृश हो जाएँगे। जैसा कि हम 1 यूहन्ना 3:2-3 में पढ़ते हैं :

> **हम . . . जानते हैं, कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है। (1 यूहन्ना 3:2-3)**

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं का अध्ययन करने के द्वारा यह खोज की कि कैसे परमेश्वर हमारे जैसा है। हमने इस प्रयास में ऐसे तरीकों में बाइबल आधारित नीवों को देखा है जिनमें बाइबल के लेखकों ने परमेश्वर की तुलना उसकी सृष्टि के साथ की है, विशेषकर उसके स्वरूप में रचे गए मनुष्यों के साथ। और इससे बढ़कर, हमने यह अध्ययन भी किया है कि विधिवत धर्मविज्ञानियों ने इन ईश्वरीय विशेषताओं के विषय में कई औपचारिक धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को कैसे विकसित किया है। हमने उनके द्वारा प्रयोग की गई प्रक्रियाओं, ऐतिहासिक प्रलेखों की प्रतिनिधि सूचियों, परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के उनके तार्किक सगंठन, और मसीह के अनुयायियों के लिए इन धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के कुछ व्यावहारिक आशयों पर भी ध्यान दिया है।

यह समझने के लिए चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, परमेश्वर अपनी सृष्टि के प्रत्येक पहलू से बहुत भिन्न है। परंतु जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा है, वह कई रूपों में हमारे जैसा भी है। और इस अध्याय में हमने परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के विषय में जो देखा है, वह किसी सिद्धांत से बहुत बढ़कर है। जब हम परमेश्वर की धर्मशिक्षा के इस पहलू को समझते हैं, तो हम और भी गहराई से समझ जाते हैं की परमेश्वर कौन है। और हम यह भी और अधिक पूर्णता के साथ समझ जाते हैं कि परमेश्वर हमसे अपने जीवनों में प्रतिदिन कैसे लोग बनने की अपेक्षा करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।